अजायब बानी

मासिक पत्रिका मई-2025

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–तेइसवां | अंक–पहला | मई–2025

02
वक्त की कद्र करें
एक सन्देश

03
अमोलक तोहफा
सतसंग

13
सेवा का महत्व
सवाल–जवाब

23
सुख और दुख
सतसंग

32
धन्य अजायब
जानकारी

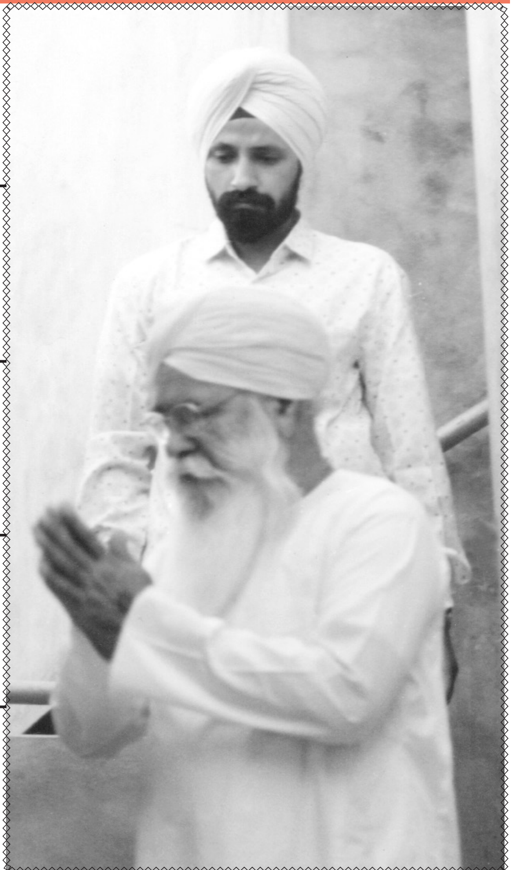

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान)

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 278 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद

वक्त की कद्र करें

मैं आर्मी में रहा हूँ, शुरु में जब तक सिपाही रंगरूटी पास न कर ले तब तक उसकी गलती माफ होती है कि इसे ज्ञान नहीं लेकिन जब वह पास हो जाता है, कसम उठा लेता है और पूरा सिपाही बन जाता है फिर उसे माफी नहीं दी जाती कि तुझे हर कानून की जानकारी दी गई थी। इसी तरह सतसंगी इस बात से वाकिफ हैं कि हमें हर गलती का भुगतान खुद ही करना पड़ेगा तो हम कौन सा मुँह लेकर गुरु के पास जाएंगे?

सन्त–महात्मा संसार में आकर हमें बहुत प्यार से समझाते हैं कि आपको जो वक्त मिला है आप उस **वक्त की कद्र करें**। महाराज जी कहा करते थे, ''दरिया की लहर और वक्त किसी का इंतजार नहीं करते।'' पीछे से एक नदी आ रही थी और आगे जाकर वह दो नदियां बन रही थी।

आमतौर पर सन्तों की निगाह में जब कोई ऐसा दृश्य आता है तो वे उसका निशाना रखकर अपना कोई न कोई शब्द उचारते हैं। वहां गुरु नानकदेव जी ने यह शब्द लिखाः

नदीआ वाह विछुँनिआ मेला संजोगी राम।।

यह पानी जो अलग–अलग जा रहा है फिर इसका मिलना मुश्किल है कि यह कब समुंद्र में गया, कब भाप बनकर उड़ा, पहाड़ों पर बारिश हुई फिर नीचे आया। पता नहीं फिर यह किस नदी–नाले में चला जाएगा।

प्यारेयो, हमें जो वक्त मिला है हम उस **वक्त की कद्र करें**।

***

अमोलक तोहफा

DVD-562(2)

09 जून 1992 हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी पोटर व्हैली-अमेरिका

हाँ भई, अपनी-अपनी जगह बैठकर आराम से सतसंग सुनें। सन्त महात्माओं के उपदेश का सार तत्व यही होता है कि हम लोग दुनिया में बुद्धिमानों की तरह रहें। सन्त न तो हमारा पहनावा बदलवाते हैं, न समाज और न भाषा ही बदलवाते हैं। महात्मा यह भी कहते हैं कि आपके बच्चों के लिए जो फर्ज हैं, पत्नी का पति के लिए और पति का पत्नी के लिए जो फर्ज हैं, उन सारे फर्जों को पूरा करते हुए अपना कुछ अमोलक समय प्रभु की याद में भी लगाएं।

परमात्मा ने हमें पत्नी, बच्चे और धन-दौलत दिया है, हमें इन चीजों का सही इस्तेमाल करना चाहिए। इनसे काम लेना चाहिए न कि हम इनके दास बनकर रह जाएं। जिस परमात्मा ने हमें इतना कुछ दिया है, सेहत दी है, सब कुछ दिया है हम उसे भुलाकर न बैठ जाएं। महात्मा हमें यह भी कहते हैं कि हर जीव नाम का **अमोलक तोहफा** प्राप्त करने के लिए संसार में आया है। जो जीव मनुष्य का जन्म पाकर नाम की दौलत प्राप्त नहीं करते उन्हें फिर दोबारा जन्म लेना पड़ेगा, माता के पेट में नौ महीने रहकर घोर प्रायश्चित करना पड़ेगा।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि माता के पेट में बच्चा उल्टा लटका होता है, वह अपनी सारी एकाग्रता और सारा ध्यान तीसरे तिल पर रखता है और परमात्मा के आगे विनतियां करता है कि हे प्रभु, मुझे इस घोर नर्क से बाहर निकालकर बाहर की हवा लगवा, मैं जरूर तेरी भक्ति करूंगा। पहले मुझसे जो गलतियां हो गई कि नाम प्राप्त नहीं किया, अब मैं जरूर नाम प्राप्त करूंगा। तेरी भक्ति करूंगा और ज्यादा से ज्यादा समय

तेरी याद में बिताऊंगा लेकिन जब बाहर जन्म होता है तो यह अजीबो–गरीब नजारे देखता है। जिस परिवार में जन्म होता है वहाँ खुशी की लहर दौड़ जाती है बेशक यह बोल नहीं सकता लेकिन आँखों से नजारों को देखकर बहुत खुश होता है कि ये नजारे मुझे सदा ही मिलते रहेंगे। अंदर के प्रकाश से ख्याल को हटा लेता है और बाहर सूरज, चन्द्रमा, सितारों के प्रकाश में ख्याल को लगा लेता है। अंदर प्रभु की आवाज जिसके सहारे माता के पेट में इसकी रक्षा हुई थी, उससे ख्याल हटाकर बाहर बहन–भाई की आवाज के साथ अपना मन लगा लेता है।

जवानी में आकर प्रभु को भुला देता है, शराबों–कबाबों और विषय–विकारों में मस्त हो जाता है। बुढ़ापा आने पर मौत आकर गला दबा देती है, जिन पदार्थों को, बाल–बच्चों को सारी जिंदगी अपना बनाता रहा वे अपने मतलब की खातिर तो जरूर रोते हैं लेकिन जाते हुए को रख नहीं सकते, छुड़वा नहीं सकते, वे जल्दी से जल्दी अग्नि या मिट्टी के सुपुर्द कर देते हैं। गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैंः

बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि।।
इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि।।

न बालपना रहेगा, न जवानी रहेगी न बुढ़ापा रहेगा, इनमें से किसी ने भी आपका साथ नहीं देना। महात्मा संसार को सच्चाई बताने के लिए आते हैं। वे जो कुछ भी बोलते हैं किसी खास समाज और किसी खास व्यक्ति को आँखों के सामने रखकर नहीं बोलते, वे कुल कायनात के लिए बोलते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

परथाए साखी महा पुरख बोलदे साझी सकल जहानै।।

परमात्मा ने सन्त–महात्माओं को संदेश देकर संसार में भेजा होता है। उनके ऊपर यह जिम्मेदारी होती है कि संसार को असलियत बताएं। आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनेंः

कोइ मानो रे कहन हमारी। कोइ मानो रे कहन हमारी।।

स्वामी जी महाराज बहुत प्यार से कहते हैं कि हमारा उपदेश कुल आलम के लिए है। चाहे हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख या इसाई है, चाहे अमेरिका, हिन्दुस्तान या यूरोप का रहने वाला है चाहे औरत या मर्द है, बूढ़ा या बालक है, कोई भी मानकर देखे उसका फायदा है, आत्मा को शान्ति मिलती है। मैं जो कहूंगा आपके फायदे का ही कहूंगा।

गुरु गोबिंद सिंह जी के जमाने में हिन्दुस्तान में बहुत उथल–पुथल हो रही थी, किसी का भी धर्म सुरक्षित नहीं था। गुरु साहब ने धर्म और असहायों की रक्षा के लिए अपनी तलवार उठाई। वे जब जंग फतेह करके मालवा में आए तो उन्होंने कहा कि सब अपनी तलवारें लेकर आ जाएं हम इन तलवारों को धरती में दबा देते हैं क्योंकि अब इन तलवारों का कोई काम नहीं, अकाल पुरख वाहेगुरु ने हमें फतेह दे दी है।

सिखों को जो तलवारें दी थी, सबने वे तलवारें गुरु साहब को दे दी। एक आदमी ने तलवार को अच्छा जानकर अपने घर में रख लिया, गुरु गुरु गोबिंद सिंह जी ने उसे बुलाकर प्यार से कहा कि तू अपने घर की तलाशी ले, तेरे घर में एक तलवार है। इस तलवार को रखने में फायदा नहीं। उसने कहा कि महाराज जी, आप मेरे ऊपर इल्जाम लगा रहे हैं।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने स्वाभाविक ही कहा कि ये तलवार आपके पेट में पड़ा करेगी। उनका यह वाक आज कायम है, जहां भी उस परिवार के पाँच–सात लोग शादी–ब्याह में शामिल होते हैं वहाँ, खूब तलवारें चलती हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी ने तो उसके फायदे के लिए ही कहा था। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैं इस शब्द में आपके फायदे का ही बताऊंगा।

जो जो कहूं सुनो चित देकर। गौं की कहूं तुम्हारी।।
जग के बीच बँधे तुम ऐसे। जैसे सुवना नलनी धारी।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि हम इस संसार में इस तरह बंधे हुए हैं जिस तरह तोते को पकड़ने वाली युक्ति बँधी होती है। बेशक हम सब कुछ जानते हैं, काम की बुराई को समझते हैं, क्रोध के नतीजे को समझते हैं, लोभ मोह और अहंकार को भी समझते हैं। विषय–विकारों से हमारे शरीर का जो सत्यानाश होता है, उसे भी समझते हैं लेकिन छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। जहर खाते भी रहते हैं और हाय–हाय भी करते हैं।

मरकट सम तुम हुए अनाड़ी। मुट्ठी दीन फँसा री।।

शिकारी लोगों ने जब बंदर को पकड़ना होता है, वे एक छोटे गले वाला बर्तन जमीन में गाड़ देते हैं और उसमें कुछ फुल्लियां डाल देते हैं। बंदर लालचवश जब उस बर्तन में हाथ डालता है तब हाथ सीधा होता है, पतला होता है लेकिन जब मुट्ठी भरता है तो हाथ मोटा हो जाता है। लालच वश बंदर फुल्लियों वाली मुट्ठी ढीली नहीं करता, चीखें मारता है और रोता है। शिकारी जिन्होंने यह कला बनाई होती है, वे आकर उस बंदर को पकड़ लेते हैं और घर–घर उसका खेल बनाकर उसे नचाते हैं।

स्वामी जी ने ये तो एक मिसाल दी है, सच्चाई यह है कि काल हमारी ताक में एक शिकारी की तरह फिरता है कि कब मैं इसे अपने जाल में फँसाऊ। विषय–विकारों, मान–बड़ाई के जाल काल ने ही बिछाए हुए हैं। हम इनमें फँसकर परेशान जरूर हैं लेकिन इस मुट्ठी को ढीली करने के लिए तैयार नहीं, प्रभु की तरफ लगने के लिए तैयार नहीं।

और मीना जिह्वा रस माती। काँटा जिगर छिदा री।।
गज सम मूरख हुए इस बन में। झूठी हथनी देख बँधा री।।

आप कहते हैं कि शिकारी लोग कुंडी को गोश्त लगाकर दरिया में फैंक देते हैं। मछली सब्र नहीं करती, गोश्त खाने के लिए कुंडी गले में फँसा लेती है फिर उसे हांडियो में चढ़ना पड़ता है, कीमा–कीमा होना पड़ता है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि हाथी बहुत ताकतवर जानवर है, इंसानों को अपने ऊपर उठाकर घूमता है। शिकारी लोग एक गड्ढा खोदकर उसके ऊपर एक कमजोर छत डाल देते हैं और उस छत के ऊपर कागजों की झूठी हथनी बनाकर खड़ी कर देते हैं। हाथी काम के वश होता है उसे सच्चाई का ज्ञान नहीं होता, हाथी गड्ढे में गिर जाता है। कई दिन तक भूखा-प्यासा रहता है जब कमजोर हो जाता है तो शिकारी लोग उसे पकड़ लेते हैं। कामी आदमी को पास खड़ा हुआ इंसान दिखाई नहीं देता। उसे अपने पराए का ख्याल नहीं होता, वह जानवर बन जाता है। हम माया को भोगना चाहते हैं लेकिन माया हमें भोग लेती है। हम विषय-विकारों को भोगना चाहते हैं लेकिन विषय-विकार हमें भोग लेते हैं।

क्या क्या कहूं काल अन्याई। बहुविधि तुमको फाँस लिया री।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैं आपको और क्या-क्या मिसालें देकर बताऊँ ये सब काल के चरित्र हैं, काल के खेल हैं। उसके पास आपको बाँधने के लिए अनेकों ही जाल हैं।

तुम अनजान मर्म नहिं जाना। छल बल कर इन फाँस लिया री।।

अब आप कहते हैं कि आप इस दुनिया में आकर अंजान हैं, आपको पता नहीं कि दुनिया में किस तरह रहना है और क्या करना है? काल ने अपने छल-बल आपके ऊपर थोप दिए हैं और आपको फँसा दिया है।

छूटन की विधि नेक न मानो। क्यों कर छूटन होय तुम्हारी।।

सन्त-महात्मा कहते हैं कि छूटने की विधि 'शब्द-नाम' की कमाई है। हर जीव नाम का **अमोलक तोहफा** प्राप्त करने के लिए आता है लेकिन विरली आत्माएं ही इसमें कामयाब होती हैं।

सतगुरु संत हुए उपकारी। उनका संग करो न सम्हारी।।

आप प्यार से कहते हैं कि सन्त आकर हमें बताते हैं कि इस विषय–विकारों के जंगल में भटकने से आपको कुछ नहीं मिलेगा आपको इसका बहुत बुरा नतीजा भुगतना पड़ेगा। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

निमख काम सुआद कारणि कोटि दिनस दुखु पावहि।।
घरी मुहत रंग माणहि फिरि बहुरि बहुरि पछुतावहि।।

हमारी कमियां दो किस्म के आदमी ही बता सकते हैं। हमारा कोई विरोधी सामने खड़ा होकर ही कह देता है कि आपके अंदर यह कमी है। हमें गुस्सा नहीं करना चाहिए बल्कि उसके साथ मोहब्बत करनी चाहिए कि भाई, तेरा धन्यवाद है तूने मुझे बता दिया और उस कमी को छोड़ देना चाहिए। या फिर कोई महात्मा हमें सतसंग के जरिए प्यार से समझाते हैं लेकिन हम महात्मा के बताए नुख्स को छोड़ने की बजाय गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं कि हमें यह लफ्ज क्यों कह दिया।

परमात्मा जब हमारी यह हालत देखते हैं तो सदा ही सन्त रूप धारण करके संसार में आते हैं, वह आकर अपना सतसंग जारी करते हैं। हम सतसंग भी नहीं सुन सकते क्योंकि हम अपने कारोबार में मस्त होते हैं, बहुत थोड़े ही भाग्यशाली जीव हैं जो उनकी संगत से फायदा उठाते हैं।

वे दयाल अस जुगत लखावें। कर दें तुम छुटकारी।।

हमारे ऊपर दो शक्तियां ही दया कर सकती हैं, परमात्मा या जिस शरीर में वह गुरु प्रकट है। परमात्मा को हमने देखा नहीं, उससे हम सीधी दया प्राप्त नहीं कर सकते। सन्तों को हम देखते हैं, उन्हीं से हम दया प्राप्त कर सकते हैं।

सन्त हम पर दया करके हमें 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ देते हैं कि प्यारे बच्चो, यह रास्ता आपके घर सच्चखंड में जाता है अगर आप इस रास्ते पर चलेंगे तो अपने घर पहुँच जाएंगे। वह शान्ति का देश है फिर वे यह भी नहीं कहते कि आप अकेले जाएं, वे हर मंजिल पर हमारे साथ हैं।

महात्मा के अंदर परमात्मा ने दया, रहम और हमदर्दी रखी है इसलिए वे हमें उस नाम के साथ जोड़ते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु सबको चाहे गुरु को चाहे न कोए।
दुनिया ऐसी दिवानी भाई भक्ति भाव न बूझे जी।
कोई आए तो दुख का मारया हम पर कृपा कीजे जी।
कोई आए तो बेटा मांगे यही गौसाई दीजे जी।
सच्चे का कोई ग्राहक नाहीं झूठे जगत पतीजे जी।
कहत कबीर सुनो भई साधो अंधे को क्या कीजे जी।।

पाँच तत्त्व गुन तीन जेवरी। काटें पल पल बंधन भारी।।

हमारी आत्मा पाँच तत्त्वों–हवा, पानी, मिट्टी, अग्नि, आकाश और तीन गुण–रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण में कैद हैं। गुरु अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं उसमें गुरु का तप और त्याग काम करता है। जब हम प्यार भरे हृदय और भरोसे के साथ सिमरन करते हैं तो हमारा ख्याल जो बाहर फैला होता है वह तीसरे तिल पर एकाग्र होना शुरु हो जाता है। जब हम सूरज, चन्द्रमा और सितारे पार कर लेते हैं, गुरु स्वरूप को प्रकट कर लेते हैं तब गुरु के सच्चे शिष्य बन जाते हैं। रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण से ऊपर चले जाते हैं तो हमारा तीनों गुण और पाँच तत्वों से छुटकारा हो जाता है। यह देह पराई लगने लगती है। अब आत्मा देह में आती है तो देह रूप है अगर यह शब्द के साथ मिल जाती है तो शब्द रूप हो जाती है।

उनकी संगत करो भर्म तज। पावो तुम गति न्यारी।।

सन्त–महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि नाम लेने से पहले आप चाहे जितनी मर्जी खोज कर लें, खोज करनी भी चाहिए। नाम लेने से पहले अच्छी तरह विचार लेना चाहिए। जब हमारे शक दूर हो जाते हैं और हम नाम ले लेते हैं फिर हमें खोज में नहीं लगना चाहिए। अगर हमें उस महात्मा पर शक–शकूक न हो तो ही हमारी आत्मा अंदर जाएगी।

महाराज सावन सिंह जी दादू दयाल के शिष्योंकी कहानी सुनाया करते थे कि एक बार दो पंडित दादू दयाल के पास नाम लेने गए। दादू साहब डेरे से बाहर जा रहे थे। दादू साहब मुसलमान जाति से ताल्लुक रखते थे उनका सिर ब्लेड से बिल्कुल साफ किया हुआ था। हिन्दु मत में बाहर जाते हुए अगर कोई सिर मुंडाया हुआ मिल जाए तो उसे अपशकुन मानते हैं। उन शिष्यों ने सोचा कि महात्मा के पास आए हैं लेकिन अपशकुन हो गया है। उन दोनों ने दादू साहब के सिर पर मारकर कहा, ''अरे दादू का डेरा कहाँ है?'' दादू साहब बहुत नम्रता वाले थे, उन्होंने इशारा करके कहा कि यही है। वहाँ संगत बैठी थी उन शिष्यों ने पूछा कि महात्मा जी कहाँ गए हैं? संगत ने कहा कि बाहर गए हैं अभी आकर सतसंग सुनाएंगे।

जब दादू साहब वहाँ आकर बैठ गए तो उन्होंने देखा कि ये तो वही महात्मा हैं जिनके सिर पर हमने मारा था, वे बहुत शर्मिन्दा हुए। दादू साहब ने कहा, ''देखो प्यारेयो, अगर कोई दो पैसे की हांडी खरीदता है तो वह उसे भी खड़का कर देखता है। कोई बात नहीं मैं आपको नाम दूँगा।''

महात्मा के कहने का भाव यह है कि पहले जो मर्जी खोज कर लें। जब उनसे नाम ले लिया तो भ्रम छोड़ देना चाहिए। सच्चे दिल से उनकी संगत में जाना चाहिए, ईमानदारी से नाम की कमाई करनी चाहिए फिर देखें कि सुरत अंदर जाती है या नहीं।

जगत जाल सब धोखा जानो। मन मूरख संगत कीन्ही यारी।।

हम जो संसार देख रहे हैं यह धोखा है। जब मौत आती है, तो कोई हमारे साथ नहीं जाता। यह शरीर भी यही छोड़ देते हैं, हमें दुनिया गुमराह नहीं करती हमारा मन ही अंदर बैठा हमें गुमराह करता है, यह मूर्ख है।

इसका संग तजो तुम छिन छिन। नहिं यह लेगा जान तुम्हारी।।

मन ने बहुत से ऋषि–मुनियों को धोखा दिया, वे अच्छी आत्माएं थी। उन्होंने इतना सख्त तप साधा लेकिन जब मन की बात सुनी तो मन ने

उनका मजाक उड़ाया, उन्हें दुनिया से भी ज्यादा बुरा बना दिया। हमारे अंदर ही बीमारी है, अंदर ही दवाई है और गुमराह करने वाला मन भी हमारे अंदर ही है।

अपने घर से दूर पड़ोगे। चौरासी के धक्के खा री।।

मन आपको गुमराह करके आपके अपने घर सच्चखंड से दूर ले जाएगा, चौरासी में डाल देगा। परमात्मा ने हमें इंसान का जामा **अमोलक तोहफा** अपनी भक्ति और तरक्की करने के लिए दिया था लेकिन हम इस जामें में मन का साथ लेकर फिर चौरासी में चले जाते हैं। हम सब एक पिता के बच्चे हैं, ये लड़ाई झगड़े मन की वजह से ही हैं।

बड़ी कुगति में जाय पड़ोगे। वहाँ से तुम को कौन निकारी।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि आप चौरासी में चले जाएंगे। पशु–पक्षी के जामें में, कीड़ों के जामें में, नर्क में चले जाएंगे। कभी सोचा है कि हम जिनके साथ मौहब्बत करते हैं, उनमें से कोई हमें निकालेगा? गुरु निकालने वाले हैं, गुरु के साथ प्यार नहीं, गुरु के ऊपर श्रद्धा नहीं, गुरु के कहे मुताबिक हमने अपना जीवन नहीं ढाला।

ता ते अब ही कहना मानो। राधास्वामी कहत विचारी।।

मनुष्य का जामा ही होश संभालने का है। बिगड़ी बनाने का है जो काम हमने पहले किसी जामें में नहीं किया वह इस जामें में कर सकते हैं। हमें यह आगे के लिए नहीं छोड़ना चाहिए। यह सबूत है कि अगर पहले हमें गुरु मिला होता, नाम मिला होता तो हम इस दुखी दुनिया में हाजिर न होते।

स्वामी जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में बहुत प्यार से जो कुछ भी कहा है, वह हमारे फायदे के लिए ही कहा है। अब हमारा भी फर्ज बनता है कि हम स्वामी जी महाराज का कहना मानकर 'शब्द–नाम' की कमाई करें अपने जीवन को पवित्र बनाएं। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सेवा का महत्व

15 जनवरी 1980 मुम्बई

एक प्रेमी – *सन्त जी, जब आप बाबा बिशनदास जी से ज्ञान प्राप्त कर रहे थे, उस समय वे आपके साथ बहुत कठोर थे। मेरा ख्याल है कि इसी रूप में आपको उनका आर्शीवाद मिला लेकिन हमारी तालीम बिल्कुल भिन्न है। मैं अपनी नम्रता की कमी के कारण बहुत हतोत्साहित हो जाता हूँ, आप हम जैसों की क्या मदद कर सकते हैं?*

बाबा जी – नम्रता पैदा करने के लिए सबसे अच्छा तरीका है कि ज्यादा से ज्यादा भजन–अभ्यास करें अगर शिष्य में कोई गलती न हो तो गुरु उसे नहीं फटकारते। जिन प्रेमी आत्माओं के अंदर गुरु के प्रति विश्वास है, जब वे फटकारी जाती है तो उस फटकार में भी गुरु की दया होती है। गुरु अपने शिष्यों को बहुत अच्छा बनाना चाहते हैं लेकिन हमारी हालत ऐसी है कि जब हमें गुरु की फटकार मिलती है तो हमारे रंग बदल जाते हैं, हम नाराज हो जाते हैं और कभी–कभी गुरु से दूर भी हो जाते हैं।

नम्रता न होने के कारण हम फटकार सहन नहीं कर पाते, पहचान नहीं पाते कि उस फटकार में कितनी दया है? अगर हम यह गुण धारण कर लें गुरु जो भी दे, उसे स्वीकार करें। जब गुरु डाँटे तब हम नाराज न हों तभी हम अपने अंदर नम्रता का विकास कर सकते हैं। गुरु की मर्जी में खुश रहें, गुरु से जो भी मिले उसे स्वीकार करें, चाहे वह डाँट हो या प्रशंसा। इससे आप अपने अंदर नम्रता ला सकते हैं।

हजरत बाहू कहते हैं, ''गुरु धोबी की तरह है, वह यह नहीं देखते कि यह कपड़ा जेन्टलमेन का है या तेली का है। धोबी को अपने करतब पर मान होता है। वह कपड़ों को धोने के लिए साबुन और कई चीजों का

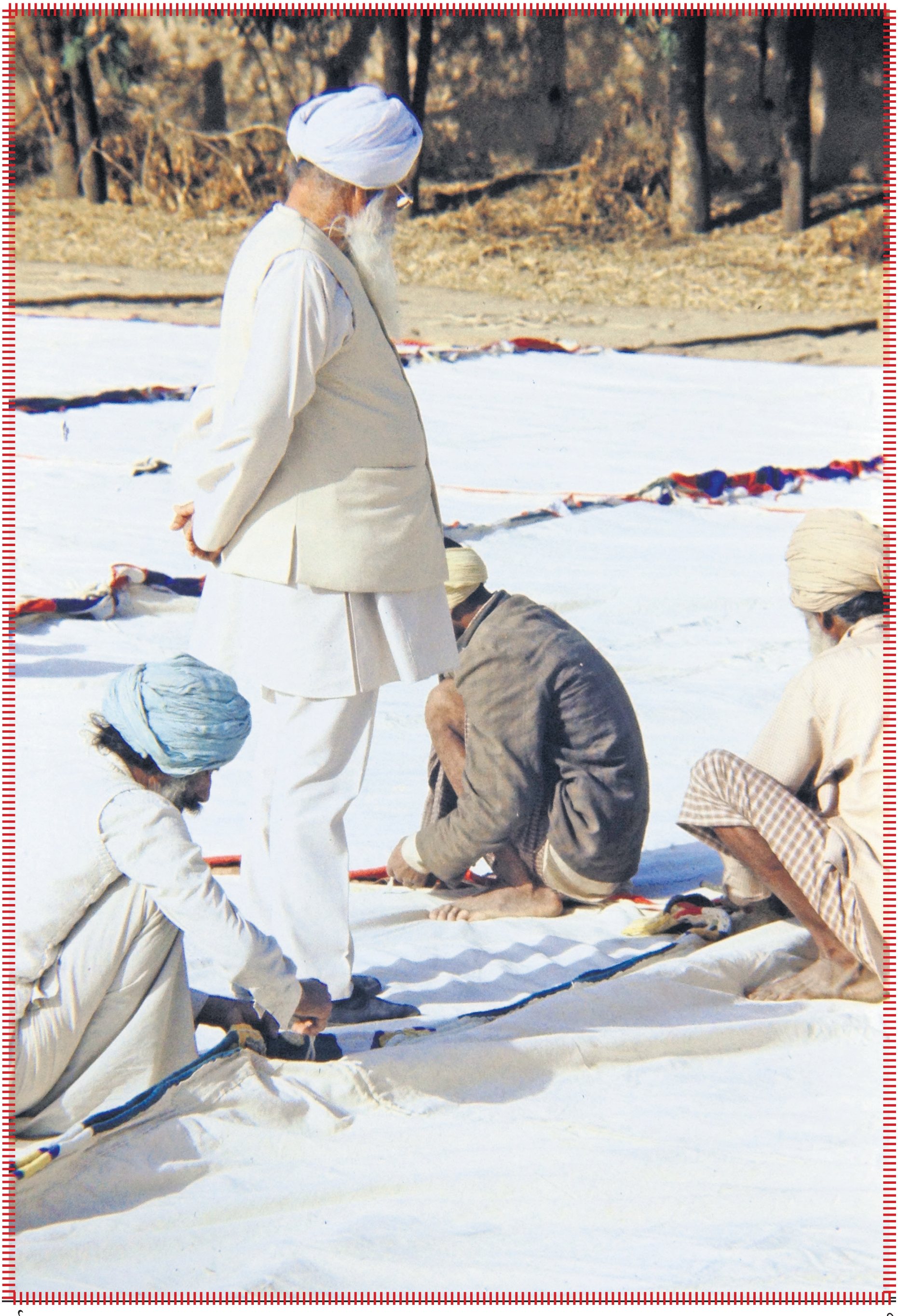

इस्तेमाल करता है, उसे उन कपड़ों को साफ करने से मतलब है। इसी तरह गुरु भी धोबी की तरह काम करते हैं। वे शिष्य पर कोई साबुन नहीं लगाते लेकिन अपनी कठोरता के जरिए शिष्य पर मेहनत करते हैं। उन्हें शिष्य की पवित्रता की परवाह होती है लेकिन हमारी यह हालत है कि हम यह सब स्वीकार नहीं करते।

शिष्य के दिल में गुरु के प्रति प्यार और भरोसा होना चाहिए। शिष्य को सोचना चाहिए कि गुरु जो भी करते हैं उसके भले के लिए और उसे पवित्र बनाने के लिए ही करते हैं। यदि गुरु कठोर हो जाएं तो शिष्य गुरु से अपना मुँह मोड़ लेते हैं और दूर हो जाते हैं।

सन्त–सतगुरु अनुभवी और पूर्ण पुरुष होते हैं, उनके वचन हमेशा सच निकलते हैं। वे शिष्य के बारे में सब कुछ जानते हैं। वे जानते हैं कि शिष्य किस तरह कर्मों से छूट सकता है, वे हमेशा समझदारी के शब्द उचारते हैं। गुरुमुख के मुख से जो शब्द निकलते हैं, उनके एक या अनेक अर्थ होते हैं। वे शिष्य के सामने ऐसी परिस्थिति पैदा कर देते हैं, जिससे शिष्य अपने कर्मों का भुगतान आसानी से कर सके। गुरु सब कुछ देख सकते हैं जबकि शिष्य अंधे होते हैं। शिष्य नहीं जानते कि उनके लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा है।

गुरु शिष्य के बारे में सब कुछ जानते हैं, कभी कर्म बहुत भारी होते हैं। गुरु उन कर्मों के भुगतान के लिए शिष्य के सामने सबसे आसान चीज रखते हैं लेकिन शिष्य को लगता है कि गुरु बहुत कठोर हैं। जब गुरु शिष्य के साथ कठोर व्यवहार करते हैं तो शिष्य उनसे दूर हो जाते हैं। शिष्य समझते हैं कि गुरु बेकार में ही उनके साथ कठोर व्यवहार कर रहे हैं।

उस समय शिष्य अपने आपको भाग्यशाली महसूस करे कि गुरु कठोर बनकर उनकी मदद कर रहे हैं, उनसे कष्ट भुगतवाकर उनके कर्मों का भुगतान करवा रहे हैं लेकिन हम यह नहीं समझते और गुरु से दूर हो जाते हैं।

एक प्रेमी – *हम लोग जब काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की बीमारियों को मिटाने के लिए गुरु से प्रार्थना करते हैं तो क्या इससे गुरु को कोई कष्ट होता है?*

बाबा जी – मैं हमेशा कहा करता हूँ कि गुरु सदा ही शिष्य की मदद करते हैं, गुरु की मदद के बिना शिष्य कुछ भी हासिल नहीं कर सकता। जैसे बच्चा सो रहा हो तो माता घर की देखभाल करती है। जब बच्चा जाग जाता है, रोने लगता है तो माता सारे काम छोड़कर बच्चे के पास दौड़कर आती है और बच्चे की माँग पूरी करती है।

गुरु का ध्यान हमेशा हमारी तरफ रहता है, वे हर समय हमारी मदद कर रहे होते हैं लेकिन जब हम प्रार्थना करते हैं तो वे हमारी तरफ विशेष ध्यान देते हैं, हमारी मुनासिब मदद करते हैं और जरूरत अनुसार हमारे कर्म भी अपने ऊपर लेते हैं। कबीर साहब कहते हैं, ''जब मैंने बाहें फैलाकर गुरु को पुकारा, गुरु आए और उन्होंने मुझे अपनी बाहों में उठा लिया।''

एक प्रेमी – *आपने कहा है कि हमें गुरु से प्यार और भजन–सिमरन माँगना चाहिए। क्या हमें प्रार्थना करनी चाहिए या जो कुछ आपने दिया है उसे स्वीकार कर लेना बेहतर है?*

बाबा जी – आप जो प्रार्थना करते हैं वह ठीक है सिर्फ प्रार्थना करने से ही काम नहीं चलेगा, आपको सिमरन भी करना होगा। जैसे विद्यार्थी स्कूल ही न जाए, रास्ते में बैठकर अध्यापक से प्रार्थना करने लगे कि मेरी पढ़ाई में मदद करें, वह परीक्षा में पास नहीं हो सकता। जब वह स्कूल जाकर अध्यापक से प्रार्थना करेगा तब अध्यापक जरूर उसकी मदद करेंगे और वह बहुत कुछ सीखेगा। वह अध्यापक के कहने का पालन करेगा तो परीक्षा में जरूर पास होगा। इसी तरह जब हम दिल से प्रार्थना करते हैं तब हमें साथ–साथ सिमरन भी करना चाहिए और आज्ञा का पालन भी करना चाहिए। हम ऐसा करेंगे तो हमारी प्रार्थना के अच्छे परिणाम निकलेंगे।

सन्त कहते हैं, ''हे परमात्मा, अगर हम आपके 'नाम' के अलावा कुछ भी माँगे तो हमें शान्ति नहीं मिलेगी क्योंकि सब चीजें हमें दुःख देंगी इसलिए आप दया करके हमें अपना 'नाम' दें।''

हम सांसारिक जीव नहीं जानते कि गुरु से क्या माँगना है इसलिए हम कष्ट भोगते हैं। हम हमेशा सांसारिक चीजें माँगते हैं जो कष्ट और मुसीबत का कारण बनती हैं। जब हम गुरु से सांसारिक चीजें माँगते हैं तो गुरु जरूर देते हैं, हम उस वस्तु को पाकर शुरू-शुरू में खुश होते हैं लेकिन जब उसका उपयोग करने लगते हैं तो वही चीजें दुखदायी साबित होती है। फिर हम गुरु से उन चीजों को वापिस लेने के लिए प्रार्थना करते हैं।

गुरु और परमात्मा को छोड़कर हम जो कुछ भी उनसे माँगते हैं वे चीजें हमें आज या कल तकलीफ देती हैं। इसलिए गुरु से सिर्फ गुरु को ही माँगे। जब गुरु आपके अंदर प्रकट हो जाएंगे तब आपको और कुछ माँगना ही नहीं पड़ेगा क्योंकि वे बिना माँगे ही आपकी हर जरूरत को पूरा करेंगे।

एक प्रेमी – *आप हमें गुरु के प्रति सेवा करने का महत्त्व समझाएं?*

बाबा जी – मैं सेवा के बारे में बहुत कुछ बोल चुका हूँ। इस बारे में सन्तबानी मासिक पत्रिका में बहुत कुछ छप चुका है। आप लोगों को सन्तबानी पत्रिका के उस अंक को पढ़ना चाहिए।

आप लोग राजस्थान गए हैं, आपने वहाँ देखा है कि सेवादार कैसे काम करते हैं। राजस्थान के सेवादार अनपढ़ किसान हैं वे आपकी भाषा नहीं जानते। वे महीने में बीस दिन अपना दुनियावी काम करते हैं और दस दिन जब आप वहाँ होते हैं तो वह सेवा करने आते हैं। उन्हें आपकी भाषा नहीं आती फिर भी वे पूरे दिल से आपकी सेवा करते हैं। उन्हें देखकर आप लोगों को भी सीखना चाहिए।

राजस्थान के सेवादार अनपढ़ हैं, वे नहीं जानते कि आप उनकी सेवा से खुश हैं या नहीं। वे फिर भी सेवा करते रहते हैं। जब आप लोग मुझे बताते हैं कि प्रेमी उनकी सेवा से खुश हैं, तब मैं उन्हें बतलाता हूँ कि वे जो सेवा कर रहे हैं, वह सेवा स्वीकार है।

हम इस दुनिया में लोगों की सेवा करते हैं तो कई बार उसका फल यहीं पा लेते हैं। जो सेवा करता है उसे सब कुछ मिलता है। गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखा है अगर हम इस दुनिया में लोगों की सेवा करते हैं और जब गुरु के धाम पहुँचते हैं तो गुरु हमारी कद्र करते हैं।

जिस समय भारत पर मुसलमान राज्य कर रहे थे, उस समय सिखों को बहुत सताया गया। सिखों ने कुछ प्रान्तों पर चढ़ाई करके मुसलमानों को परेशान किया। मुसलमानों ने सोचा अगर देश का कुछ हिस्सा सिखों को दे देंगे तो सिख उन्हें परेशान नहीं करेंगे, उन्होंने एक प्रान्त सिखों को दे दिया। उस सिख समुदाय में एक झाड़ू लगाने वाला था जो गुरु और दूसरे लोगों की सेवा करता था। सिखों ने वह प्रान्त उस झाड़ू लगाने वाले के नाम कर दिया। जब हम निस्वार्थ भाव से गुरु और संगत की सेवा करते हैं तो हमें उसका फायदा इसी दुनिया में मिल जाता है।

इसलिए हमें हमेशा पूरे दिल से सेवा करनी चाहिए। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जिसे जो भी सेवा मिले शारीरिक, मानसिक, आर्थिक या सुरत–शब्द की उसे उस सेवा से फायदा उठाना चाहिए।''

यह किस्सा राजस्थान के प्रेमियों का है। आश्रम के नजदीक के एक गाँव में दो परिवार रहते थे, एक परिवार में एक बेटा और दूसरे परिवार में दो बेटे थे। वे तीनों जवान बेटे एक हत्या के मामले में फँस गए, उनका उस हत्या में कोई हाथ नहीं था। उस गाँव के कुछ लोग दोनों परिवारों को पसन्द नहीं करते थे। उस गाँव के लोगों ने झूठ बोलकर उनके खिलाफ फर्जी मामला दाखिल कर दिया।

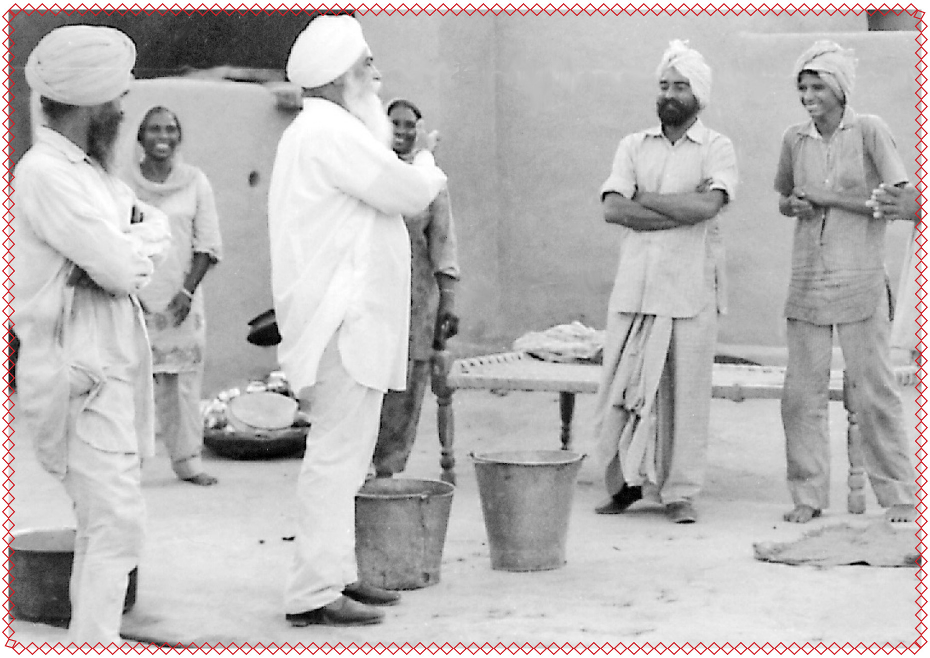

हत्या का मामला बड़ा संगीन था इसलिए उन तीन जवानों का छूटना असंभव था। उनके माता-पिता ने अच्छे-अच्छे वकील किए, काफी पैसा खर्च किया लेकिन उनके छूटने की कोई उम्मीद नहीं थी। किसी ने उनके माता-पिता से कहा कि वे गुरु के लंगर में जाकर बर्तन धोएं, हो सकता है कि गुरु की दया से कुछ मदद मिल जाए। वे आश्रम में आए और सतसंग के बाद थालियाँ धोने लगे हालांकि आप जानते हैं कि आश्रम में अपनी थाली खुद धोनी होती है। उन्होंने दूसरे सतसंगियों से प्रार्थना करके उनकी थालियाँ धोकर यह सेवा की।

गुरु की दया से सात महीने बाद उनके तीनों जवान बेटे छूट गए। उनके माता-पिता उन तीनों को आश्रम लाए और उनसे कहा, ''हमने तुम्हें छुड़वाने के लिए बहुत पैसा खर्च किया लेकिन तुम छूट नहीं सके। हमने यहाँ आकर संगत की थालियाँ धोईं इसलिए तुम छूट गए हो।''

अगर आप यह बात समझें, आप भी संगत की सेवा करके अपना जीवन सफल बना सकते हैं। संगत की सेवा करने से आपको दुनियावी जीवन में मदद मिलेगी और आपकी आत्मा की मैल भी उतरेगी। सेवा हमारे दुनियावी जीवन को ही नहीं बल्कि रूहानी जीवन को भी सुधारती है। सेवा करना बहुत अच्छा है। कोई भी इसे आजमाकर देख सकता है। जो सेवा करता है, उसे मेवा अवश्य मिलता है।

बचपन से ही मेरा भाव सेवा की तरफ था। पंजाब में एक जगह श्री मुक्तसर साहिब है, वहाँ सिख लोग गुरुद्वारे के पास तालाब बना रहे थे। देश के अलग–अलग भागों से बहुत से लोग वहाँ सेवा करने के लिए आए। उस समय मैं किशोर था और मुझे अंदाजा नहीं था कि सेवा की क्या कीमत है, हमें सेवा क्यों करनी चाहिए। मेरे माता–पिता वहाँ सेवा कर रहे थे इसलिए मैं भी उस तरफ खिंचा चला गया।

उस समय तक मैं बाबा बिशनदास जी से नहीं मिला था, मुझे किसी पंथ या भगवान का कोई ज्ञान नहीं था लेकिन मेरी सेवा करने की इच्छा थी। मैं अपने घर से लंगर के लिए चाय, चीनी और कुछ धन जो मेरी हैसियत में था, ले जाता था। आमतौर पर गाँव के लोग शौच करने के लिए खेतों में जाते थे। मैंने देखा कि उसी शौच पर बैठने वाली मक्खियाँ लंगर के भोजन पर बैठती थी। मैं सारा दिन उस गंदगी पर रेत डालता ताकि मक्खियाँ लंगर के भोजन पर न बैठें। इस सेवा के लिए मुझे किसी ने नहीं कहा था। कोई भी यह सेवा नहीं करना चाहता था। शौच की गंदगी पर रेत डालना बहुत नीचे दर्जे की सेवा है। मैंने सोचा यह अच्छा मौका है, मैं इस तरह लोगों की सेवा कर सकता हूँ।

हमें जब भी गुरु की सेवा का कोई मौका मिले तो हमें उस मौके से फायदा उठाना चाहिए अगर हम नीचे दर्जे की सेवा करते हैं तो उसका ऊँचा फल मिलता है। सेवा करने से हमारी आत्मा को शान्ति मिलती

है और हमारा मन स्थिर होता है। सेवा करने से हमारे मन में नम्रता आती है। सेवा करने से भजन–अभ्यास करने की इच्छा पैदा होती है। हम सेवा करने के बाद भजन–अभ्यास में बैठते हैं तो भजन बनता है।

एक प्रेमी *– सन्त जी, आप अपने सेवादारों से कहें कि उनकी सेवा बहुत अच्छी है। हम उन्हें कुछ भी कहने से डरते हैं क्योंकि हम उनकी सेवा बिगाड़ना नहीं चाहते।*

बाबा जी – हमें कभी भी सेवादारों की तारीफ उनके मुँह पर नहीं करनी चाहिए, उनके सामने उनकी तारीफ करके हम उनका भला नहीं करते। जब आप लोग सेवादारों की तारीफ करते हैं तो वे सोचते हैं कि प्रेमी उनकी सेवा से खुश हैं इसलिए वे सेवा में इतना ध्यान नहीं देते, मेहनत नहीं करते और यह तारीफ उन्हें बिगाड़ देती है। कई सेवादार यह आशा करते हैं कि गुरु उनकी तारीफ करें। जब गुरु उनकी तारीफ करते हैं तो वे भजन–अभ्यास छोड़ देते हैं, सोचते हैं कि गुरु उनसे बहुत खुश हैं, अब उन्हें भजन–अभ्यास करने की क्या जरूरत है।

अगर बाबा बिशनदास जी ने मेरी तारीफ की होती तो हो सकता है कि मैं बिगड़ जाता। मैं अपना सारा वेतन लेकर उनके पास जाता, जिसमें से वे मुझे खर्च करने के लिए पाँच रूपये ही देते थे। उन्होंने कभी इस बात की सराहना नहीं की कि मैं एक अच्छा लड़का हूँ बल्कि वे मुझे थप्पड़ लगाते।

मेरे दिल में बाबा बिशनदास जी के लिए बहुत इज्जत है। मैं जब भी उन्हें याद करता हूँ या उनके बारे में बात करता हूँ तो मुझे रोना आ जाता है क्योंकि उन्होंने ही मेरी जिंदगी बनाई। बाबा बिशनदास जी के प्रसाद के कारण ही मेरी मुलाकात महाराज कृपाल से हुई।

अगर शिष्य गुरु की लताड़ सहता है तो यह उसके लिए बहुत अच्छा है अगर शिष्य गुरु के वचनों का पालन करता है तो उसे इस संसार में और आगे भी फायदा मिलता है। ❊❊❊

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सुख और दुख

26 जनवरी 1987 — गुरु नानकदेव जी की बानी — 16. पी.एस.आश्रम–राजस्थान

एक बार गुरु नानकदेव जी से सेवकों ने विनती की कि आप अपने सतसंगों में सुखों और दुखों के बारे में बयान करते हैं। **सुख और दुख** क्या हैं? हम जीव तो अंधेरे में फँसे हुए हैं, हमें न सुख का पता है और न दुख का पता है। मामूली सा दुख या कोई समस्या आने पर हम रो पड़ते हैं, मामूली सा सुख आने पर हममें अहंकार आ जाता है। आप हमें प्यार से समझाएं ताकि हम फायदा उठा सकें।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''प्यारेयो, वह सुख नहीं जिसका अन्त दुख हो। हम भोग भोगते हैं क्षण–भंगुर सुख को सुख समझते हैं, भोग से रोग उत्पन्न होते हैं। रोग पैदा होने पर हम पछताते हैं। आप कहते हैं:

बहु सादहु दूखु परापति होवै।। भोगहु रोग सु अंति विगोवै।।
नावहु भुला ठउर न पाए आइ जाइ दुखु पाइदा।।

सन्तों के कहने का भाव उस दुख से है जो हमें मौत के समय भुगतना पड़ता है। जो पैदा होता है वह अवश्य मरता है। जो 'नाम' की कमाई के बिना संसार छोड़ता है, उसे अपने कर्मों के मुताबिक कहीं न कहीं जन्म अवश्य लेना पड़ता है।

प्यारेयो, माँ के पेट के अंदर जीव की हालत देखें, यह वहाँ उल्टा लटका होता है, वह बड़ी तंग और अंधेरी जगह है। किसी तरफ कुछ भी दिखाई नहीं देता, माँ को भी अपना दुख नहीं बता सकता। वहाँ इसने सब सहारे छोड़कर एक परमात्मा का ही सहारा रखा होता है। परमात्मा ने इसे वहाँ से बचाकर मातलोक में भेजा। अफसोस की बात है कि यह यहाँ आकर क्षण–भंगुर सुखों को ही सुख समझकर उस धनी परमात्मा को भूल गया कि फिर उसके आगे पेश होना है।

महात्मा हमें याद दिलवाते हैं कि थोड़ा सोचकर देखें, वह कष्ट का समय हर किसी को देखना पड़ता है। इसलिए गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''सबसे बड़ा दुख मौत और पैदाइश का है।'' गुरु साहब कहते हैं:

मुखु तलै पैर उपरे वसंदो कुहथड़ै थाइ।।
नानक सो धणी किउ विसारिओ उधरहि जिस दै नाइ।।

बाबा जयमल सिंह जी कहा करते थे, ''बच्चे को नब्बे दिन तक माता के पेट की जठर अग्नि का ताप सहना पड़ता है। हड्डियाँ जठर अग्नि से पकी होती हैं, इसलिए सख्त होती हैं।''

जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ।।

दोनों आग एक जैसी होती हैं, बाहर आकर मातलोक की पवन का नशा चढ़ जाता है। जीव परमात्मा को भूल जाता है।'' महात्मा हमें सावधान करते हैं और उस देश सच्चखंड जहाँ की यह आत्मा रहने वाली है, वहाँ के सुख के बारे में बताते हैं कि वहाँ मौत-पैदाइश, ईर्ष्या और माया का कोई असर नहीं।

महात्मा बताते हैं कि सुख प्राप्त करने की कीमत दु:ख है। आप दुनिया में कोई भी कारोबार करें, मेहनत करनी पड़ती है, कष्ट उठाना पड़ता है। बिना कष्ट उठाए माता बच्चा भी पैदा नहीं कर सकती। इसी तरह सोना खान खोदकर निकाला जाता है। मोती समुंद्र में गहरी डुबकी लगाकर प्राप्त किया जाता है। अगर कोई यह कहता है कि मैंने बिना मेहनत किए, बिना कष्ट उठाए सुख या परमात्मा को प्राप्त कर लिया है तो वह एक और कर्ज उठा रहा होता है। हमें सन्तों की जीवनियाँ पढ़कर पता चलता है कि उन्होंने कितना संयम रखा होता है, कितनी मेहनत की होती है, कितनी भूख-प्यास काटी होती है।

भाई गुरुदास जी बहुत श्रद्धालु और अच्छी कमाई वाले थे। आप अपनी वार में लिखते हैं:

रेतु अक्कु आहारु करि रोड़ा की गुर कीअ विछाई।

गुरु नानक साहब बेदी कुल में पैदा हुए थे। अब भी बहुत लोग बेदी कुल का आदर करते हैं। आपके माता-पिता आपको सब किस्म की सहूलियतें दे सकते थे लेकिन आप ग्यारह साल तक आक के पत्ते उबालकर पीते रहे और आपने दुनिया के सब सुख आराम छोड़कर ईंट-पत्थरों का बिछोना किया।

गुरु नानकदेव जी की पूज्य माता ने आपसे पूछा, ''बेटा, नाम जपना कितना मुश्किल है?'' आपने आँखें भरकर कहा:

आखणि अउखा साचा नाउ।।

सच्चा 'नाम' कह देना बहुत मुश्किल है। हम जितना नाम की तरफ आकर्षित होते हैं, मेहनत करते हैं वह मालिक हमारे सामने उतनी ही मुश्किलें खड़ी कर देता है। वह देखता है कि क्या ये इन्हीं मुश्किलों में उलझ गए हैं या मुझसे मिलकर ही खुश होंगे। राजस्थान की कहावत है:

तेरे दु:खां दी बणूंगी दारू, ते सुख तेरे रोग होणगे।

आप कहते हैं, ''अगर हम यहाँ कष्ट सहते हैं, रातें जागते हैं, मेहनत करते हैं, परमात्मा की भक्ति करते हैं तो परमात्मा में मिल जाते हैं। अगर हम विषय-विकारों में लगकर परमात्मा को भूल जाते हैं तो हमारे अंदर परमात्मा से मिलने की इच्छा ही पैदा नहीं होती।'' कबीर साहब कहते हैं:

सुख में सिमरन ना किया, दुख में किया याद।
दुखी होय दास की, कौन सुने फरियाद।।

अगर हमारे दरवाजे पर कोई जोरावर दुश्मन आ जाए, हम उस समय बंदूक चलाना सीखें या प्यास लगने पर कुँआ खोदें तो हम कभी भी कामयाब नहीं हो सकते। जीवों की यही हालत है। जब अन्त समय आता है, बीमारियाँ घेर लेती हैं, तब हम दान-पुण्य करते हैं। बहुत से समाजों में मौत के समय मरने वाले को गीता या किसी धर्म पुस्तक का पाठ सुनाते

हैं। अगर उस समय मरने वाला सुन नहीं सकता क्योंकि कान जवाब दे देते हैं, उस समय उसकी जगह कोई और सुनने बैठ जाता है और एक पानी का गिलास रखता है। वह पानी उसके मुँह में डाल देते हैं। हिन्दू लोग ज्योत जलाकर पूछते हैं, ''क्या ज्योत नजर आ रही है?''ये सब हमें जीते जी करना था। अन्त समय में क्या हो सकता है। कबीर साहब कहते हैं:

ब न भजसि भजसि कब भाई, आवै अंतु न भजिआ जाई।।

दुखु दारू सुख रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई।।
तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी ने होई।।

आप कहते हैं, ''सुख रोग है। दुखों से छुटकारा पाने के लिए 'नाम' की कमाई करनी चाहिए।''

संसारु रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना।।

तू करण–कारण और पतित पावन है जो चाहे सो करता है। तुझे कोई सलाह नहीं दे सकता। कबीर साहब कहते हैं:

अपना चितविआ हरि करै जो मेरे चिति न होइ।।

परमात्मा जो चाहे सो करता है। हमारे सोचने से क्या होता है। गुरु साहब प्यार से कहते हैं:

मता करै पछम कै ताई पूरब ही लै जात।।

हम पूर्व की तरफ जाना चाहते हैं, वह पश्चिम की तरफ ले जाता है। हमें उसकी प्लेनिंग का ज्ञान नहीं। जानवर प्यासे मरते हैं, वह एक पल में इतनी बारिश कर देता है कि जल–थल हो जाता है। राजा रात को सोता है सुबह होते ही दूसरी पार्टी वाले उसे कैद करके जेल की कोठरी में डाल देते हैं। इसी तरह शेर जंगल में आजाद है, जब शिकारियों के हाथ में आ जाता है तो अपने आपको पिंजरे में पाता है।

सन्त वजीदा कहते हैं, ''एक के घर में बेटे हैं, आगे उनके भी बेटे हैं। एक के घर में बेटियाँ हैं आगे उनके भी नाती हैं। एक के घर में सिर्फ

एक ही बच्चा होता है और वह भी किसी एक्सीडेंट में मर जाता है। उस परमात्मा को कौन कह सकता है कि तू ऐसे नहीं, ऐसे कर।''

बलिहारी कुदरति वसिआ। तेरा अंतु न जाई लखिआ।।

आप कहते हैं, ''मैं तुझ पर बलिहार जाता हूँ। तू बहुत सुंदर तरीके से जीवों के अंदर बस रहा है। ज्योत रूप होकर सबको सतह दे रहा है। तेरा कोई अंत नहीं पा सका। बड़े-बड़े आलिम-फाजिलों ने बहुत जोर लगाया। आखिर तुझे बेअंत कहकर चुप हो गए।''

जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ।

आप कहते हैं, ''तू सारे जीवों में ज्योत रूप, शब्द रूप होकर विराजमान है। तू सबकी रक्षा कर रहा है। तू जीवों में इस तरह मिला हुआ है, जिस तरह पानी में पतासा मिल जाता है। कबीर साहब कहते हैं:

ज्यों तिल माहीं तेल है, ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझमें, जाग सके तो जाग।।

परमात्मा सबमें इस तरह समाया है, जिस तरह तिलों में तेल दिखाई नहीं देता लेकिन यत्न से निकाला जाता है। पत्थर में अग्नि है लेकिन युक्ति से रगड़कर निकाली जाती है। इसी तरह तेरा प्यारा प्रीतम तेरे अंदर है अगर तू हिम्मत करके उसे जगा सकता है तो जगा ले, मिलाप करना चाहे तो मिलाप कर सकता है।

तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ।।

अब आप कहते हैं, ''तू सच्चा साहिब है, कभी फना नहीं होता। तू आदि-जुगादि से चला आ रहा है। जिस भाग्यशाली जीव ने तेरी सिफत गाई, तेरी भक्ति की, वह सदा के लिए दुखों से छुटकारा पा गया, इस संसार समुद्र से तर गया।''

कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ।।

जिन प्रेमियों ने आपसे सवाल किया था, आप उन्हें प्यार से कहते हैं, प्यारेयो, मैंने तुम्हें उस करण–कारण परमात्मा से मिलने के फायदे बताए हैं। वह परमात्मा ज्योत रूप होकर सबके अंदर विराजमान है। वह जो चाहे सो कर सकता है। उसे कोई सलाह देने वाला नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, कोई भाई–बंधु नहीं।

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह।।

किसी ने गुरु अंगददेव जी से सवाल किया कि यह दुनिया चार वर्णों– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में बँटी हुई है, क्या इनके धर्म अलग–अलग हैं? गुरु अंगददेव जी कहते हैं, ''प्यारेयो, परमात्मा से जुड़ने का नाम योग है। ब्राह्मण का धर्म 'शब्द–नाम' की कमाई करना और लोगों को भी 'शब्द–नाम' का ज्ञान देकर भक्ति में लगाना है।''

खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह।।

आप कहते हैं कि क्षत्रिय का धर्म बहादुरी करना और लोगों को भी बहादुरी के लिए प्रेरित करना है। देश की सेवा क्षत्रिय लोग ही करते हैं। शूद्र का धर्म है लोगों के घरों की सफाई करना, मेहनत करके अपनी रोजी–रोटी कमाना।

सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''ब्राह्मण का धर्म यज्ञ करना और यज्ञ करवाना, विद्या पढ़नी और विद्या पढ़ानी, अतिथियों की सेवा करनी और करवानी है। सबका धर्म 'नाम' जपना है। परमात्मा का धर्म ही हमारी आत्मा का धर्म है।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

सरब धरम महि स्रेसट धरमु।। हरि को नामु जपि निरमल करमु।।

महात्मा सच्चखंड से आते हैं, वे दुनिया में बंटवारा नहीं करते। पहले के बने हुए समाजों को नहीं तोड़ते और न ही कोई नया समाज बनाते हैं।

वे आकर सच्चाई बताते हैं कि किस तरह परमात्मा की भक्ति करनी है। वह परमात्मा सबके अंदर है।

महात्मा हमें बताते हैं कि जिस तरह सूरज की कोई जाति नहीं, वह सबको एक समान रोशनी देता है। इसी तरह परमात्मा की भी कोई जाति–पाति नहीं। जो परमात्मा की भक्ति करता है, परमात्मा उसी के हो जाते हैं।

एक क्रिसनं सरब देवा देव देवा त आतमा।
आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ।
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ।।

आप कहते हैं कि एक कृष्ण जो सबसे बड़ा परमात्मा है, वही सबका देवता है। वही जीवित रूप में आत्मा होकर सब जीवों में विराजमान है। जो इस भेद को समझ लेता है वही जीते जी देवता है और मैं उसका सेवक हूँ। यह मसला बातों से हल नहीं होता। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गली किनै न पाइआ।।

सन्त–महात्मा हमें अपना तजुर्बा बताते हैं कि हमें किस तरह अपने ख्यालों को पवित्र करना है, किस तरह सन्तों का दिया हुआ सिमरन करना है, किस तरह तीसरे तिल पर एकाग्र होना है। जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाते हैं फिर हमें कुछ समझ आती है क्योंकि यहीं से हमारे सफर की शुरुआत होती है। जब हम अपने अंदर परमात्मा को देख लेते हैं तब हमें सच्चाई का पता चलता है कि परमात्मा सबके अंदर विराजमान है।

ऐसा सतसंगी, ऐसा महात्मा जीते जी देवता है। ऐसा सतसंगी किसी के साथ द्वेष नहीं रखता, सबको परमात्मा का बच्चा समझता है। गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज कहते हैं:

साध करम जे पुरख कमावै।। नाम देवता जगत कहावै।।

जिन लोगों ने नेक कर्म किए, सबको परमात्मा का जीव समझकर प्यार किया, किसी को कष्ट नहीं पहुँचाया, सबकी मदद की, लोग उन्हें देवता कहने लगे। जिन्होंने संसार में आकर परमात्मा के जीवों पर अत्याचार किए, उन्हें दैत्य कहकर बयान किया गया है।

कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होई।।

आप अपने प्यारों से कहते हैं कि घड़ा पानी के बिना नहीं बन सकता, उसकी उत्पत्ति पानी से हुई है। पानी घड़े में रहता है, नहीं तो पानी बिखर जाएगा। आपका मन दुनिया में हिरण की तरह भटक रहा है उसे गुरु का 'नाम' ही थाम सकता है। मालिक के प्यारों की उत्पत्ति परमात्मा में से हुई है, उनके अंदर भी परमात्मा है। सेवक को भी परमात्मा ने ही पैदा किया है।

महात्मा ने परमात्मा को अपने अंदर प्रकट कर लिया होता है और उस ताकत को संसार में काम करते हुए देख लिया होता है लेकिन सेवक अभी उस कोशिश में है। जिस दिन सेवक उस ताकत को अपने अंदर प्रकट कर लेता है फिर गुरु और सेवक दोनों में कोई भिन्न-भेद नहीं रहता।

गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ।।
पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारी।।

गुरु नानकदेव जी से आपके सेवकों ने विनती की, ''हमें यह बताएं कि पढ़ा-लिखा परमात्मा से मिल सकता है या अनपढ़ परमात्मा से मिल सकता है? अगर पढ़ा-लिखा गलती करे तो क्या उसकी गलती माफ हो सकती है या अनपढ़ की गलती माफ हो सकती है?''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''अगर पढ़ा-लिखा गलती करता है तो उसकी जगह अनपढ़ साधु को सजा नहीं दी जा सकती। हम जानते हैं कि इस दुनिया में भी अगर कानून का जानकार गलती करता है तो उसे

सजा मिलती है। यहाँ पढ़े–लिखे और अनपढ़ का सवाल नहीं। हमें अच्छे कर्मों का इनाम और बुरे कर्मों की सजा मिलती है।''

जेहा घाले घालणा ते वेहो नाउ पचारीऐ।।

जो जैसे कर्म करता है, उसका वैसा ही नाम पड़ जाता है। नाम जपने वाले को सतसंगी, भक्त या सन्त कह देते हैं। बुरे कर्म करने वाले के कई तरह के नाम रख देते हैं।

ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ।।

हमें ऐसे कर्म नहीं करने चाहिए जिनकी वजह से हमें परमात्मा के दरबार में जाकर शर्मिन्दा होना पड़े और हमारी हार हो।

पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारी।।

परमात्मा के दरबार में पढ़े–लिखे और अनपढ़ का विचार नहीं होता। जिसने जैसा कर्म किया होता है, उसे वैसी ही सजा और इनाम मिलता है।

मुहि चलै सु अगै मारीऐ।। मुहि चलै सु अगै मारीऐ।।

आप कहते हैं कि वह परमात्मा सांस–सांस का हिसाब लेता है। उसकी किसी के साथ दुश्मनी नहीं, किसी के साथ प्यार नहीं। वह हमारे कर्म और करतूत देखता है अगर हम बुरे कर्म करके जाते हैं तो यमदूत हमें पीटते हैं फिर हम पछताते हैं।

हमें भी चाहिए कि हम गुरु नानकदेव जी के कहे मुताबिक 'शब्द–नाम' की कमाई करें। सदा ही परमात्मा की भक्ति में लगे रहें और अपने जीवन को सफल बनाएँ।

***

धन्य अजायब

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम

16, 17 व 18 मई – 2025

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान में सतसंगों के कार्यक्रम

2. 07, 08, 09, 10, 11 व 12 सितम्बर
3. 03, 04 व 05 अक्टूबर
4. 31 अक्टूबर, 01 व 02 नवम्बर
5. 05, 06 व 07 दिसम्बर

RNI No - RAJHIN/2003/9899

हमें जब भी गुरु की सेवा का कोई मौका मिले तो हमें उस मौके से फायदा उठाना चाहिए अगर हम नीचे दर्जे की सेवा करते हैं तो उसका ऊँचा फल मिलता है। सेवा करने से हमारी आत्मा को शान्ति मिलती है और हमारा मन स्थिर होता है। सेवा करने से हमारे मन में नम्रता आती है। सेवा करने से भजन-अभ्यास करने की इच्छा पैदा होती है। हम सेवा करने के बाद भजन-अभ्यास में बैठते हैं तो भजन बनता है।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज